आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:11-11-14

बाप और वर्से की याद सिखलाकर हमें पदमापदम भाग्यशाली बनाने वाले भाग्य विधाता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - मनमनाभव के वशीकरण मंत्र से ही तुम माया पर जीत पा सकते हो और वर्से को याद करने से तुम सदा खुशी में रहते हो.

बाबा ने आज की मुरली में हमें ड्रामा का एक और राज (razz) समझाते हुए कहा कि इस ड्रामा के अन्त में विनाश भी नेचरल रुप से होता हैं. इसमें किसी का कोई दोष नहीं. ऐसे नहीं कि शंकर के आंख खोलने से विनाश हो जाता है या भगवान (ग़ॉड़) आकर यह विकारी दुनिया का विनाश कर देते हैं. असूल में जब मनुष्य आसुरी बुद्धि के बन जाते है तो एक-दो को ही मार के खत्म कर देते हैं. दूसरा इस दुनिया के विनाश के लिए यह नैचुरल कैलेमिटीज भी बहुत मदद करती हैं. विनाश किसी के डायरेक्शन से नहीं होता पर अपने समय पर अपने आप ही ड्रामा अनुसार होता हैं.

बाबा कि आज की मुरली से बाप और वर्से को याद करने के लिए कहे गये महा-वाक्यों को आत्मिक स्थिति में रहकर पढ़ेंगे.

बाबा की याद के लिए कहे गये महावाक्य -

- यह बाबा जो नई सृष्टि रचने वाला है, वही पहले-पहले मंत्र देते हैं मनमनाभव. यह है वशीकरण मंत्र अर्थात माया पर जीत पाने का मंत्र. बाबा ने इसका अर्थ भी समझाया है - अपने को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करों.

- बाप की आत्मा में ज्ञान है. हमारी आत्मा ही ज्ञान धारण करती है.

- बेहद का बाप ही पतित-पावन है, वही सद्गति दाता है.

- उन्हें कहा जाता है सुप्रीम आत्मा माना परमात्मा. वही ज्ञान का सागर है.

वर्से की याद के लिए कहे गये महावाक्य -

- तुम जानते हो बरोबर सतयुग में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था और कोई खण्ड नहीं था. फिर बाद में यह खंड हुए है. भारत में इन देवी-देवताओं का राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था. अभी यह जो इतने सारे धर्म है यह सब नहीं रहेंगे.

- बाप आकर ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना करते है. जमुना के कण्ठे पर है नई दुनिया की कैपिटल.

- स्वर्ग में एक ही धर्म होता है. मनुष्य सृष्टि का झाड़ भी छोटा होता है. एक ही भारत था, एक ही राज्य था, एक ही भाषा होती है. सतयुग में सुख-शांति थी. हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस सब था.

- भारत नया था तो आयु भी बड़ी थी क्योंकि पवित्रता थी. अकाले मृत्यु नहीं होती, फुल एज होती है.

- सतयुग में हर चीज सतोप्रधान होती है. सोना भी कितना अथाह होता है. कितना सहज रुप से सोना मिलता है, जो फिर ईंटें मकान आदि बनाते है.

- हम सचखण्ड में थे. सुख भी बहुत देखा. सारे चक्र में 3/4 सुख हम देखते हैं. बाबा ने सारा ड्रामा हमारे सुख के लिए ही बनाया है. बाबा हम को बहुत सुख देते है.

शुक्रिया बाबा आपका लाख-लाख शुक्रिया.

ॐ शांति.